उत्तर वैदिक काल

[1000 BC - 600 BC]

(3rd lecture)

Scanned with CamScanner

उत्तर वैदिक काल
[1000 BC - 600 BC]

इस काल मे विकास के क्रम मे सभी अवस्थाओ में परिवर्तन दिखलाई पड़ता है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है —

—: राजनीतिक जीवन :—

ऋग्वैदिक काल के बाद इस काल में राजा का पद वंशानुगत हो गया। अब शासक पूर्व की अपेक्षा निरंकुश और काफी शक्तिशाली हो गया था। इस काल में विदथ का नामोनिशान नही रहा। सभा एवं समिति कायम थी लेकिन उनका महत्व समाप्त हो गया था। अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

⇒ **राजसूय यज्ञ** :-
राज्याभिषेक के ठीक बाद इस यज्ञ को किया जाता था। राजा बारह रत्निन (मुख्य अधिकारी) का समर्थन प्राप्त करता था, जिसे हवि कहा गया।

⇒ **अश्वमेध यज्ञ** : यह यज्ञ साम्राज्य विस्तार के लिए सम्पन्न होता था।

⇒ **वाजपेय यज्ञ** :- इस यज्ञ को मनोरंजन के रूप में रथो का दौड़ आयोजन किया जाता था।

→ इस काल खानपान रहन-सहन वेशभूषा और मनोरंजन का साधन पहले के समान कायम था।

→ अब कर देना अनिवार्य हो गया। कर वसूल करने वाला अधिकारी भागदुघ और कोषाध्यक्ष को संगृहिता कहा गया है।

Scanned with CamScanner

→ इस समय शासक क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के उपाधि को धारण करते थे। इसको ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्न रूपों में देखा जा सकता है —

→ जो सम्पूर्ण क्षेत्र को जीत लेता था वह एकराट की उपाधि धारण करता था।

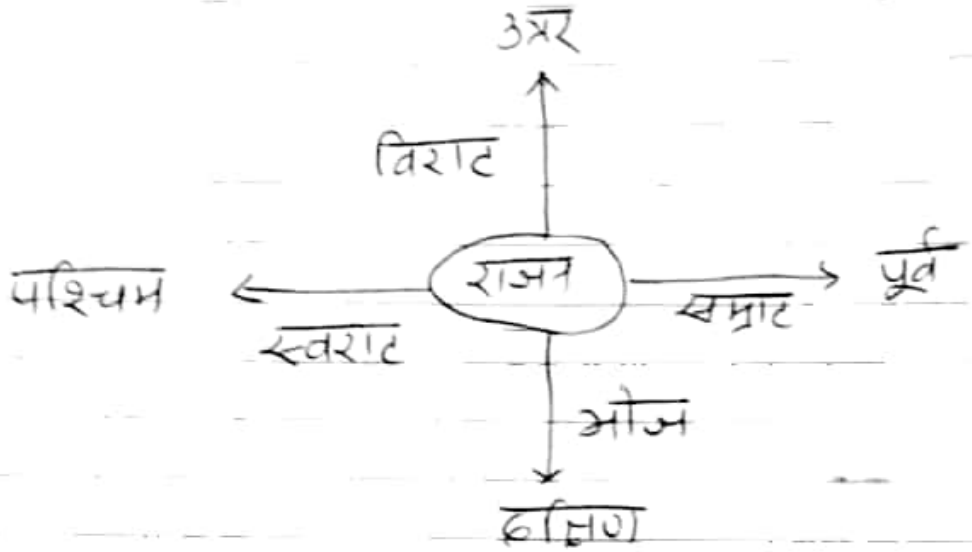

—: धार्मिक जीवन :—

इस काल में धार्मिक अनुष्ठान काफी खर्चीला हो गया। अब सर्वसाधारण लोग इस कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकते थे, क्योंकि राजसूय यज्ञ कराने वाले पुरोहित को 2,40,000 गाय दान में दिया जाता था।

→ इस काल में सर्वप्रमुख देवता प्रजापति थे, जिनको सृजन का देवता माना गया है। इस समय रुद्र की पूजा अब भगवान् शिव के रूप में होने लगा। पूषण जो पहले पशुओं के देवता थे अब शूद्रों के देवता हो गये।

Scanned with CamScanner

→ इस काल मे धार्मिक कार्य के लिए अधिक संख्या मे पशुओ को बलि दिया जाने लगा।

→ इस काल मे पुरोहितो ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया।

—: सामाजिक जीवन :-

इस काल मे ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा सामाजिक जीवन मे जटिलताए काफी अधिक बढ़ गई थी। अब 04 वर्ण की व्यवस्था स्पष्ट रूप से स्थापित हो गया।

→ इस काल मे सर्वप्रथम गोत्र प्रथा की स्थापना हुई जो वंश अथवा कुल से संबंधित था।

→ इस समय मुख्य खाद्य पदार्थ चावल व गेहूँ था। पेय पदार्थ मे अर्जुनानी और पुतका का सेवन किया जाता था।

→ इस काल मे 04 आश्रम की व्यवस्था किया गया।
(i) ब्रह्मचर्य आश्रम (iii) वानप्रस्थ आश्रम
(ii) गृहस्थ आश्रम (iv) सन्यास आश्रम।

→ इस काल में महिलाओ की स्थिति मे पूर्व की अपेक्षा थोड़ी सी गिरावट दिखलाई पड़ता है। जैसे अब महिलाएं सभा एवं समिति मे भाग नही ले सकती थी। पिता की सम्पत्ति से अधिकार खो दिया। अब उपनयन संस्कार प्रतिबंधित कर दिया गया। फिर भी गार्गी और मैत्रेयी नामक विदुषी महिलाओ का उल्लेख मिलता है।

⇒

—: आर्थिक जीवन :—

इस काल मे कृषि के क्षेत्र मे चावल एवं गेहूँ ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। लोगो का जीवन अब स्थायी हो गया।

→ अथर्ववेद के अनुसार पृथुवैन्य ने सर्वप्रथम कृषि कार्य और हल को जन्म दिया था।

→ इस काल में लगभग 1000 BC में पाकिस्तान के गंधार क्षेत्र मे सर्वप्रथम लोहा प्राप्त हुआ। भारत के संदर्भ मे लगभग 800 BC मे लोहे का औजार मिलने लगा था। सबसे अधिक लौह औजार अतरंजीखेड़ा (उत्तरप्रदेश) से प्राप्त हुआ।

→ मृद्भाँड :- इस काल मे 4 प्रकार का मृद्भांड प्रचलन मे था -

(i) लाल मृद्भांड (ii) लाल-काला मृद्भांड
(iii) चित्रित धूसर मृद्भांड (iv) काला मृद्भांड।

→ उत्तर वैदिक कालीन संस्कृति को चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति भी कहा गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में सामाजिक और धार्मिक जीवन में अनेक बुराईयों का समावेश हो गया था। इसमें सुधार के लिए धार्मिक सुधार आन्दोलन चलाया गया।

=>

शब्दावली	अर्थ
श्याम या कृष्ण अयस	लोहा
कैवर्त	मछुआरा
सीर	हल
कर्मार	लोहार
तक्षण	बढ़ई

Scanned with CamScanner